विश्व का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति अरिहंत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अरिहंत किसे कहते हैं? वे हमारे पूजनीय कैसे हैं? अरिहंत अरि और हंत दो शब्दों के मेल से बना है। अरि का अर्थ है शत्रु हंत का अर्थ का नाश करने वाला। इसलिए अरिहंत का अर्थ हुआ शत्रुओं का नाश करने वाला। विश्व हमें दिखाई देता है। जो हमारे दृष्टिपथ में आ रहा है। वह संसार है। संसार में अच्छे और बुरे व्यवहार के कारण शत्रु और मित्र बनते बिगड़ते रहते हैं। ये शत्रु अस्थाई हैं। हमारे आत्मा के भीतर काम, क्रोध, मद, लोभ जैसे विकट शत्रु बैठे हुए हैं। जो इन शत्रुओं को नष्ट करता है वही विजेता है। उसे ही अरिहंत कहते हैं। राग–द्वेष मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। कषाय के कारण व्यक्ति संसार में भ्रमण करता रहता है। राग–द्वेष के चश्मे से राग–द्वेष ही दिखाई देता है। इसे नष्ट करने वाले अरिहंत कहलाते हैं। भगवान महावीर अरिहंत थे। उन्होंने राग–द्वेष को नष्ट कर अरिहंत का पद प्राप्त किया था।

भगवान महावीर ने सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र और तप के मार्ग को अपनाया। सबसे पहले मनुष्य को अपनी दृष्टि को सही करना चाहिए। दृष्टि निर्मल करने के लिए सत्संग आवश्यक है। तीर्थंकर दृष्टि को निर्मल करते हैं। जो सम्पूर्ण सत्य को जानता है वह केवली होता है। सम्यक् चारित्र को जीवन में उतारना चाहिए। तप साधना करनी चाहिए। इससे निर्जरा होती है। पाप रूपी नाली को रोककर संवर प्राप्त होता है। तपस्या से शोधन होता है। तीर्थंकर शुभ अशुभ से शुद्ध अवस्था में रहते हैं। ज्ञाता दृष्टा भाव में रहने का उपदेश देते हैं।

जहां तीर्थंकर विराजमान होते हैं वहां न तो अतिवृष्टि न तो अनावृष्टि और न ही महामारी का प्रकोप होता है। सभी आनन्द का अनुभव करते हैं। भगवान महावीर के मोक्ष जाने के पश्चात् मोक्ष द्वार बन्द हो गया, क्योंकि कोई धर्मदेशना देने वाला नहीं रहा। अरिहंत सर्व शुद्ध व्यक्ति हैं। अरिहंत की देशना सम्यक् होती है वे केवलज्ञानी होते हैं। तीर्थंकर की वाणी आप्त वाणी

कहलाती है। तीर्थंकर के क्षायिक भाव होता है। बिना सम्यक् दर्शन के मुक्ति नहीं हो सकती। तीर्थंकर पूजनीय होते हैं।

चौरासी लाख जीव योनियेां में जो शरीर मिलता है वह रिलेटिव है। अपने–अपने कर्मों के अनुसार चारों गतियों में सभी जीव भ्रमण करते हैं। शरीर भिन्न है और आत्मा भिन्न है। शरीर तो कर्मों का परिणाम है किन्तु आत्मा शास्वत् है। आत्मा एक है और सच्चिदानन्द है। नमस्कार मंत्र में सबसे पहले अरिहंतों को नमस्कार किया गया है। णमो अरहंताणं अर्थात अर्हतों को नमस्कार है। अर्हत के प्रति नमन, अर्हत के प्रति समर्पण, अर्हत के साथ तादातम्य और अर्हत के साथ एकता की अनुभूति अभय पैदा करती हैं। इसका सहारा लेकर हम निर्विकल्प स्थिति में पहुंच सकते हैं। वहां हमें कोई खतरा नहीं होता।

व्यवहार में लोग समझते हैं कि निर्विकल्प स्थिति में मनुष्य निकम्मा हो गया। अब वह हमारे काम का नहीं रहा। निर्विकल्प स्थिति या निर्विकल्प चेतना का अनुभव जब हो जाता है तो वहां से कभी वह च्यूत नहीं हो सकता। नमो अरहंताणं की आराधना अक्षर ध्यान की आराधना है। ज्ञान केन्द्र में श्वेत वर्ण के साथ एक–एक अक्षर का ध्यान करना चाहिए। ध्यान करने से पूर्णता की प्राप्ति होती है। जब तक अपूर्णता है तब तक अर्हत स्वभाव प्रकट नहीं होता। अज्ञान एक अपूर्णता है। दर्शन और चारित्र की न्यूनता एक अपूर्णता है। जब तक ये अपूर्णताएं हैं तब तक अर्हत तत्व का विकास नहीं हो सकता। अर्हत का ध्यान करना चाहिए। मैं स्वयं अर्हत हूॅ, मुझमें अनन्त ज्ञान विद्यमान है, मुझमें अनन्त दर्शन विद्यमान है, मुझमें अनन्त शक्ति विद्यमान है, मुझमें अनन्त आनन्द विद्यमान है।

नमस्कार महामंत्र के पदों में पहला पद अर्हतों को समर्पित है। अर्हत ज्ञान का उपदेश करते हैं। इसलिए वो पूजनीय होते हैं। अर्हत और सिद्ध की कृत–कृत्यता में दीर्घकाल का व्यवधान नहीं है। वे प्रायः समान ही हैं। आत्म विकास की दृष्टि से देखा जाए तो अर्हत ओर सिद्ध में कोई अन्तर नहीं है। आत्मविकास में बाधा डालने वाले चार घाती कर्म हैं। उनके क्षीण हो जाने पर आत्मस्वरूप पूर्ण विकसित हो जाता है। केवल भवोपगा ही कर्म शेष रहने के कारण अर्हत शरीर को धारण किये रहते हैं। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि अर्हत से सिद्ध बड़े हैं। नैश्चयिक दृष्टि से बड़े–छोटे का कोई प्रश्न ही नहीं है। यह प्रश्न मात्र व्यावहारिक है।

व्यवहार के स्तर पर अर्हत का प्रथम स्थान अधिक उचित है। अर्हत या तीर्थंकर धर्म के आदिकर होते हैं।

धर्म का स्रोत उन्हीं से निकलता है। उसी में निष्णात होकर अनेक व्यक्ति सिद्ध बनते हैं। अतः व्यवहार के धरातल पर धर्म के आदिकर होने के कारण जितना महत्व अर्हत का है उतना सिद्ध का नहीं। अर्हत विश्व का कल्याण करने के लिए जनोपदेश करते हैं उनकी वाणी लोक मंकलकारी होती है। लोक मंगल की भावना से वे प्रेरित होते हैं। उनका उपदेश सभी जीवधारी अपनी भाषा में समझते हैं। बुराइयों को छोड़ना, अच्छाइयों को जानना और समाज में उपादेयता के आधार पर उसका वितरण करना अच्छे मानव का कार्य है। विश्व कल्याण की भवना से और आत्मा के ज्ञान की शिक्षा अरिहंत वाणी का मुख्य उउ्देश्य होता है। उनकी वाणी सर्वजन हिताय होती है।